

परमार्थ की उपेक्षा डुबो देगी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति में परमार्थ के विषय में बहुत चिन्तन किया गया है। सम्पूर्ण वेद, उपनिषद, रामायण, आगम तथा अन्य भारतीय ग्रन्थों में परमार्थ का विवेचन किया गया है। परमार्थ का तात्पर्य है मोक्ष। मोक्ष भारतीय जीवन दर्शन का अन्तिम बिन्दु है। मानव में तीन प्रकार की चेतना पायी जाती है— स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ। स्वार्थ की चेतना स्व तक सीमित है। इस चेतना में मनुष्य अपने और अपने परिवार तथा सगे-सम्बन्धियों के विषय में ही चिन्तन करता है। यह चेतना सीमित है। इसमें दृष्टिकोण वृहद् नहीं हो पाता। परार्थ की चेतना परोपकार की चेतना है। इस चेतना में मनुष्य स्व और पर दोनों का चिन्तन करता है। यह चेतना जियो ओर जीने दो में विश्वास करती है। परमार्थ की चेतना सर्वोत्कृष्ट चेतना है। इस चेतना के जागृत हो जाने पर मनुष्य सबकुछ त्यागकर परमार्थ पथ पर गमन करने लग जाता है। हमारे समाज में ऋषि, मुनि, साधु परमार्थ की चेतना में जीवन जीते हैं। उनका उद्देश्य स्वयं तरिये और दूसरों को भी तारिये। सदा दीवाली संत की बारह महीने बसंत की कहावत उनके लिए उपयुक्त है। जिसको समाज से कुछ नहीं लेना देना रहता है ऐसे प्राणी आत्मरमण करते हैं। आत्मा ही मनुष्य का सबसे उच्च आदर्श है। संत कंचन कामिनी से दूर रहता है। समाज को त्यागकर सबके साथ प्रेम रखता है। संत परमार्थ की चेतना को जीवित रखता है। परमार्थ को समझने के लिए आत्मा को जानना आवश्यक है। तीन प्रकार की आत्माएं हैं— पहला बहिर् आत्मा इस अवस्था में मानव इन्द्रिय सुख का उपभोग करता है। मानव की इन्द्रियां बाह्य विषयों का आनन्द लेती हैं। अन्तरात्मा की चेतना में मानव को भीतर झांककरके देखना होता है। इसमें आत्मतुला के सिद्धान्त के आधार पर कार्य करना पड़ता है। ऐसा प्राणी किसी को दुःख नहीं देता। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् की अनुभूति इस अवस्था में होती है। तीसरी अवस्था परमात्मा की अवस्था है। संत परमात्मा के रूप होते हैं। इस अवस्था में विचारों

का प्रदूषण नहीं रहता। आज जो कुछ भी विभेद दिखायी दे रहा है वह वैचारिक प्रदूषण के कारण है। आज संसार में पशुवत चेतना वाले व्यक्ति बढ़ रहे हैं। ऐसे लोगों को उद्देश्य भोग विलास पूर्ण जीवन—यापन करना है। यदि परमार्थ की उपेक्षा की गई तो संसार भी नष्ट हो सकता है। वैज्ञानिक प्रगति ने औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया है।

आज पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। पारिस्थितिक संतुलन के बिगड़ने से ऋतु चक्र में परिवर्तन सम्भव है। कहीं अधिक शीत, कहीं अधिक वर्षा और कहीं अधिक गर्मी का प्रकोप सृष्टि के भौतिक परिदृश्य को बदल सकता है। यही कारण है कि आज पारिस्थितिजन्य अनेक बीमारियां बढ़ रही हैं। बीमारियों के बढ़ने से लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। वैसे तो प्रकृति स्वयं नियन्त्रण करती है, किन्तु मानव का भी कर्तव्य है कि विज्ञान के माध्यम से प्रकृति में हस्तक्षेप न करे। परम्परागत साधनों के माध्यम से प्रकृति को शुद्ध रखे।

आवश्यक है कि बाह्य व्यक्तित्व के साथ—साथ आन्तरिक व्यक्तित्व पर भी ध्यान दिया जाये। आन्तरिक व्यक्तित्व से तात्पर्य है आध्यात्मिक व्यक्तित्व। जिस व्यक्ति का आध्यात्मिक व्यक्तित्व जागृत हो जाता है उसे जीवन के सुख—दुःख, राग—द्वेष प्रभावित नहीं कर सकते। आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया है— योग। योग आत्म—साक्षात्कार की प्रक्रिया है। आज योग को दैनिक जीवन में समाविष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है, जिससे व्यक्ति तनावमुक्त, व्याधिमुक्त, कष्टमुक्त, स्वस्थ, संतुष्ट और श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण कर सके। किसी व्यक्ति विशेष को जानने के लिए उसके व्यक्तित्व की समग्रता जाननी जरूरी है। कोई दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते। व्यक्तित्व व्यक्ति की मात्र अभिव्यक्ति नहीं है, एक समग्र प्रक्रिया है। उपनिषद् काल के दार्शनिकों ने अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय पुरुष के रूप में आत्मा के उर्ध्वारोहण का क्रम दिया है। वैज्ञानिक दृष्टि से जीवन का प्रारंभ माता के डिम्ब और पिता के शुक्राणु के संयोग से होता है। व्यक्ति के आनुवंशिक गुणों का निश्चय क्रोमोसोम द्वारा होता है। क्रोमोसोम अनेक जींस का समुच्चय है। ये जींस ही माता—पिता के आनुवंशिक गुणों के संवाहक हैं। इन्हीं में व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक क्षमताएं सन्निहित होती हैं। ऐसी कोई भी क्षमता प्रकट नहीं हो सकती है जो जींस में न हो। विज्ञान व्यक्तित्व की व्याख्या का मानक मनुष्य को चुनता है, क्योंकि मनुष्य ही वह विवेकशील प्राणी है जो अपना एवं दूसरों

का अच्छा-बुरा सोच सकता है, गलत-सही का निर्णय कर सकता है, ह्रास-विकास के क्षणों में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण रख सकता है। वह संघर्ष, द्वन्द्व के क्षणों में समायोजन का सामर्थ्य भी रखता है। इसलिए व्यक्तित्व में सारी चर्चा व्यक्ति और चरित्र से जुड़ी है। उसके विघटन और संघटन के कारकों की खोज भी की गई है। व्यक्तित्व को जानने और अच्छा बनाने की रूचि हजारों वर्षों से जनमानस में रही है। वर्तमान युग में आधुनिक वैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से अध्ययन किया है। जन-साधारण में व्यक्तित्व का अर्थ जहां व्यक्ति के बाह्य और व्यक्त रूप में लिया जाता है, वहीं विज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के आंतरिक ओर बाह्य दोनों गुणों से लिया जाता है। व्यक्ति का विकास एक सतत प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त चलती रहती है।